श्री

गांधी–बावनी

: प्रयोजक :

दुलेराय काराणी

तेरा जीवन–व्रत क्या, स्वयं सुकाव्य नहिं ?
तेरा जीवन–काव्य क्या, स्वयं सुश्राव्य नहिं ?

गांधी-बावनी के प्राप्ति-स्थान

गुर्जर ग्रंथरत्न कार्यालय : गांधी रस्ता : अहमदावाद

श्री विनोदभाई दुलेराय काराणी बी. अे.
शान्ति-कुञ्ज : हठीभाई वाडी सामने : अहमदावाद

डॉ. मनुभाई पांधी : कच्छ-मांडवी.

श्री मूलजी लक्ष्मीदास संपट : 'भाटिया बधर्स' न्यूस पेपर अेजन्टस, कच्छ-मांडवी.

श्री हाथीराम नरसिंहभाओी : फोटो आर्टिस्ट : कच्छ-मुन्द्रा.

श्री डी. आर. वकील : कच्छ-मुन्द्रा.

श्री ठाकरशी लधाभाओी-सोनगढ सौराष्ट्र.

प्रथमावृति : ई. स. १९४८ : वि. स. २००५

मूल्य ०)१-०-०

प्रकाशक :–
दुलेराय लालाभाई काराणी
अे. डेप्युटी अेज्यु. ओफिसर
कच्छ गवर्नमेन्ट
कच्छ-भुज.

मुद्रक :–
गोविंदलाल जगशीभाई शाह
शारदा मुद्रणालय,
पानकोर नाका,
अमदावाद.

भारतवर्ष के हृदय-सिंहासन के राजा

पंडित जवाहरलालजी नेहरु

[श्री गुणवन्तराय आनी-पटना-के सौजन्यसे]

समर्पण

परम पूज्य महात्माजी के चुने हुवे वारिस,

पंडित जवाहरलालजी नेहरु,

प्रथम महा अमात्य हिन्द सरकार, देहली.

●

भारती के नाम पे, तमाम धन-धाम शान-
शौकत को वारे, वह बीर जवाहीर तू;
अुन्मत्त, अनस्त तेज-तप्त शहन्शाहत के,
तेज को विदारे, वह तीर जवाहीर तू;

सत्य-संस्थापन, असत्य के अुत्थापन में,
धीरता न धारे, वह धीर जवाहीर तू;
यौवन की शान प्रान-प्रान में प्रकाशमान,
नेह के नजारे! नर-वीर जवाहीर तू.

भारत के लाल! तेज-ज्वाल जवाहरलाल!
फुल-माल-से रसाल, काल महा काल के!
हिम्मत के हीर-से, बसंत के समीर-से,
अमीर के अमीर आप हैं फकीर-हाल के;

बाहु सुविसाल के, प्रवाल के से लाल भाल,
चाल के मराल मस्त, वाल खुश ख्याल के,
कारणी कहत, गांधी मोहन की काव्य-माल,
कंठ में धरे कमाल, लाल मोतीलाल के!

भवदीय

दुलेराय काराणी

आमुख

तेरे जीवन-तेज से, मृत्यु अचेत आज है;
तेरी अचिन्त्य मृत्यु से, जीवन सचेत आज है.

अभीत भयातीत तू, अजीत हो गया;
घोर प्रलय-शोर में, सुगीत हो गया.

●

जी में था, कि यह "गांधी-बावनी" भारत की आझादी के प्रथमवर्षीय पुण्य-पर्व के दिन परम पूज्य महात्माजी के कर-कमल में समर्पित कर के जीवन कृतार्थ करूंगा. परंतु दैव ने कुछ का कुछ कर दिखलाया. मन की सब मन में ही रह गई. इस बावनी के साथ साथ अश्रु-बहावनी भी मिल जाने वाली थी अुस को मिथ्या करने वाला कौन था? दैव-इच्छा बलियसि.

परम पूज्य 'बापुजी' के बारे में मैं क्या कहुं? कुछ कह नहिं सकता. कहा भी नहिं जाता. जो कुछ थोडा सा कहना है, बावनी स्वयं कहेगी. अुन के अनेक विध जीवन-कार्य के संपूर्ण परिचय के लिअे *तो लाख बावनी भी अपूर्ण ही होगी.*

श्री महावीर जैन चारित्ररत्नाश्रम-सोनगढ के अधिष्ठाता, पूज्य महात्माजी के परम भक्त मुनि महाराज श्री कल्याणचन्द्रजी स्वामि ने इस बावनी की रचना में खास रस ले कर मेरे अुत्साह को झीन्दा रक्खा है अिस लिये अुन महानुभाव के प्रति अपनी कृतज्ञता अौर आभारवशता प्रकट करता हुं.

विजया दशमी : संवत् २००४
कच्छ-भुज

दुलेराय काराणी

श्री गांधी-बावनी के प्रेरक

साहित्य-प्रेमी विद्वान मुनि महाराज श्री

कल्याणचन्द्रजी स्वामि

अधिष्ठाता : श्री महावीर जैन-चारित्र-रत्नाश्रम

सोनगढ-सौराष्ट्र

श्री

गांधी-बावनी

शारदा-वंदन

दयामयी वरदायिनी, सुख-दात्री साक्षात;
भव-दुःख-भंजन भगवती, वंदुं शारद मात.

गगन-विहारी गरुड-चर तुम,
किस धरती पर आन चडे ?

पक्ष-हीन की भूमि हमारी,
यहां कहां तुम भूल पडे ?

जन्मोत्सव

कृष्णचन्द्र के सखा सुदामा की सुदामापुरी,
भव्य भाद्रपदी कृष्ण द्वादशी दिखाअी है;
विक्रम की बीसवीं सदी पच्चीसवें सुवर्ष,
विश्व की विभूति कर्मचंद की कहाअी है;
अमरापुरी से अमरेश अरु अमरों ने,
पारिजात पुष्पों की बरषा बरसाअी है;
धन धरा! धन धाम! धन मन-मोहन को,
मोहिनी मूरत आज अवनी में आअी है. -१

प्रगति : परिवर्तन

सद् विद्या विवेक से, स्वधर्म शुद्ध टेक से,
आंग्लभूमि घूमी पद बेरिस्टर को पायो है;
दच्छिन आफ्रिका आयो, कीरती कमायो केती,
दुःखी देश-बंधु देख, वहीं व्हार धायो है;
अेक ही अमोघ असहयोग के प्रयोग से,
गांधी मन-मोहन ने, महा यश पायो है;
भारती के कष्ट की अकथ्य कथा-व्यथा जान,
आफ्रिका से अेक ध्यान, आर्यावर्त आयो है.-२

असहकार

मार्त-मात को क्षुधार्त आर्त नाद आयो कान,
आन लगो बान प्रान-प्रान में पोकार को;
जात-सुख जायों, महा काम-क्रोध-मोह मार्यो,
धार्यो सेवा-धर्म मात भार्त के उद्धार को;
आज के समाज राज-ताज सारे चौंक चले,
कांप चले कोट, लीन जैसे हथियार को;
मार को संहार को न, अस्त्र असि-धार को न,
मोहन गांधी को महा शस्त्र असहकार को.--३

सत्याग्रह

स्वर्ग हु को शस्त्र कैधों,* पृथ्वी पे प्रकट भयो,
सुधारस-सार कैधों, असि हु की धार है;
कैधों प्रेम-शौर्य-पारावार को प्रवाह महा,
पुष्प सुकुमार कैधों, वज्र को प्रहार है;
कैधों राम-बाण कैधों, श्याम को अचूक चक्र,
कृष्ण को हार कैधों, तोपन को बार है;
कागणी कहत कैधों मोहन को महा मोह-
मंत्र सत्याग्रह सत्य-आग्रह को सार है.-४

* कैधों=क्या

अलख जगाय के

योगिन को योग कर्म–योग में दिखाय दीनो,
मानव–मानवता को, मर्म समजाय के;
गीता–गुन–ज्ञान कीन, प्रान में प्रकाशमान,
स्नेह–सरिता के शुद्ध, नीर में नहाय के;
मात–तात–भ्रात–पुत्र–मित्र–कुल–कलत्र के,
प्रेम को बिसार दीन, विश्व–प्रेम पाय के;
संसारी संबंध–बंध, कंध हु से फेंक दीनो,
खडे हो के चले अेक, अलख जगाय के.–५

योगीराज

अलख जगायो, आग अंग में लगायो, आयो–
धायो योगीराज आज, भारती को भायो है;
आसन संभाला अहिंसा की मृगछाला हु पे,
वपु पे विभूति विश्व–स्नेह की सोहायो है;
प्रेम का कमंडल ले, चले महि–मंडल पे,
त्रिसूल त्रिरंगी ध्वज, हस्त में अुठायो है;
आद को अनाद को न, पाद के प्रसाद को न,
गांधी गुरु–मंत्र नेह–नाद को सुनायो है.–६

काहेको ?

काहेको तू योगी भयो, काहेको वैराग्य ग्रह्यो,
काहेको तपस्वी बन, तन को तपायो है ?
काहेको वस्त्रालंकार, सुंदर सिंगार तज्यो,
काहेको कौपीन अेक, अंग पे लगायो है ?
काहेको अमीरी छोडी, काहेको फकीर भयो,
काहेको मधुर सार, भोजन न भायो है ?
कारागी कहत लीनो, काहेको कठिन पथ,
भारत के योगी ! योग काहेको जगायो है ?–७

स्नेह–योग

माता की मुक्ति के लिये, त्यागी ! तू वैरागी भयो,
देह के दमन काज, तन को तपायो है;
नंगे नर-नार देख, वस्त्र से विहीन भयो,
मानव–मर्याद काज, कौपीन लगायो है;
अमीरी को छोडी तू आझादी को फकीर भयो,
भूखी देख भारती सुभोजन न भायो है;
अहिंसा को डेरो तेरो, ओनी में अनेरो अति,
अनासक्ति योग सत्य–स्नेह से सोहायो है.–८

राम—रंग

प्रभात के प्रहर में अुठिबो अचूक जा को,
वा को प्रभु-प्रार्थना को पावन प्रसंग है;
शाम को ही यो ही, राम–नाम की रसिक धून,
धाम–धाम सुब्ह–शाम, संत–सत्–संग है;
काराणी कहत तहां, ज्ञान की बहत गंग,
तरंग–तरंग में आनंद–अुछरंग है;
नाम को न, धाम को न, दाम को दमाम को न,
अंग–अंग में अभंग, राम को ही रंग है.—९

त्याग : वैराग्य

शीत सुवासित भयो, परम् प्रकाशित भयो,
जीवन को बाग तेरो, प्रेम के पराग से;
अवनी अखिल नेह–मेह में नचाय दीनो,
मोहन ! मंजुल तेरी बांसुरी के राग से;
तेरो लगो तीर वो अमीर को फकीर भयो,
भोगी भयो योगी तेरे विकट वैराग से;
हिंद डोले हिमाचल, डोले अिन्द्र–अिन्द्रासन,
अहि डोले, महि डोले, गांधी ! तेरे त्याग से.—१०

चरखो

चरखो चलत, गांधी-जुग गरजत, चक्र-
सुदर्शन चलत, गोवर्धन-धर को;
नेह को निधान, अहिंसा को सत्य को निशान,
प्रेम को प्रमान, गुन-गान-ज्ञान हर को;
दरिद्र-नारायण दलित-दीन कोटि-कोटि,
रंकन की रोटी को पूरनहार परखो;
काराणी कहत वा के, आतमा के राम जैसो,
गांधी महाराजने चलाय दियो चरखो.—११

खादी

सूत की सुता की सत्कीरत कथी न जात,
खादी नाहिं, दिव्य देश-प्रेम की प्रसादी है;
फैल-फंद में, फितूर-फैशन में फसी हुओ,
भारत की भूमि को, सादाअि सिखलादी है;
अमर-कटारी ने डुलाओ सारी पादशाही,
मेत शाहनशाही सादी खादी ने हिलादी है;
काराणी कहत अब! गांधी मनमोहन ने,
आदि आझादी आबादी खादी में दिखादी है.—१२

जगा दिया

पूर्ण पराधीन दीन-हीन हुवे भारत में,
आ कर स्वाधीनता के बीन को बजा दिया;
मत्त सल्तनत शाहनूशाहत के पादप की,
जमाने की जड डार-डार को डगा दिया;
चिडियां की फौज बडे बाज सों लडान काज,
आज असहयोग के साज को सजा दिया;
अहिंसा की गंग को, अुमंग को सलिल सींच,
मोहन गांधी ने महा जंग को जगा दिया.—१२

हिलायो है

भारत पुरातन में, नूतन महाभारत,
रण को रमण चंपारण में चलायो है;
सत्याग्रह-वज्र--किल्ला, खेडा जिल्ला खडा किया,
भारत्-थर्मापोली बारडोली को बनायो है;
साब्रमती-सेवाग्राम, भव्य भये तीर्थ-धाम,
कलकत्ता-मोहमयी, दिल्ही को डुलायो है;
काराणी कहत राजस्थान में रचायो रंग,
मोहन गांधी ने हिंद-हिमाद्रि हिलायो है.—१४

दांडी-कूच १

बादल के नाहिं, देश-भक्तन के दल, घन–
गर्जन न हाक रण-शूरन सुनाअी है;
सुनहरी संध्या के यह, सुरंगी सिंगार नाहिं,
देश-सेविका की साडी, केसरी सुहाअी है;
अिन्द्र-धनु नाहिं, ये अुडायो है त्रिरंगी ध्वज,
मोर-धुनि नाहिं, "वंदेमातरम्" गाअी है;
भारत में भयो, ऋतु पावस को रंग नाहिं,
मोहन गांधीने कूच, दांडी पे लगाअी है.—१५

दांडी-कूच २

बंके बहादूर चले, डंके की लगाय चोट,
झंडे झूमझूम! फरहर! फरकत है;
देख देख शेखन की, शेखी खिस गअी सब,
सारी शाहनशाही का, सीना धरकत है;
जा को नाहिं जोट अैसी, अहिंसा की चोट हु से,
जालीमों के केते केते, कोट करकत है;
छोटी दांडी-कूच की छोटी-सी चिनगारी में से,
गोरी पातशाहत की, होरी प्रगटत है.—१६

धरासणा

अहिंसक वीर देश-भक्तन की भओी भीड,
चीर केसरी में देश-सेविका तैयार है;
लोगों ने लगाओी चोट, नमक के तूटे कोट,
अहिंसा की ओट* वहां बुट्ठे हथियार है,

माथा तोडे फोडे मूठी मोडे है मरोडे बाहु,
नमक ना छोडे काहु, हारी सरकार है,
काराणी कहत हक्क, नमक का राखिवे को,
गांधी ने लगाओी ये धरासणे की धाड है.—१७

अमोघ मंत्र

भारत के अंग-अंग, आझादी को आन्यो रंग,
अहिंसा को जंग तेरो, अनादि अनेरो है;
अुमंडे अथाह लोग, ठेर-ठेर थोक-थोक,
जैसो घनघोर घन, गगन में घेरो है;

काराणी कहां लौ गुन-गाथा तेरी गावे तात !
बरनो न जात अमुझात मन मेरो है;
जादु है, कि जोग है, कि मोह को अमोघ मंत्र,
प्रयोग वशीकरन, अहिंसा को तेरो है.—१८

* ओट=आड, रक्षा.

बिकानो है

घेरानो गुलामी को जमानो जोर-शोर ता में,
आझादी को ध्येय ओक, अंतर में ठानो है;
तू ने "अिन्किलाब-झीन्दाबाद" को रचायो रंग,
फाराणी कहत तू ही, स्नेह से सोहानो है;
प्रेम को दीवानो, दानो देश को दिखानो तू ही,
त्याग को खजानो, तेरे तन में समानो है;
हीरे-मोती-लाल को, अुजास मणि-माल को,
प्रवाल को प्रकाश तेरे, हास में बिकानो है.—१९

मानव-महान

धर्म-ज्ञान-मंथन में, वेद को विधान जैसो,
जैसो रविराज आज, व्योम के वितान है;
जैसो मणि-मंडल में, पारस को है प्रताप,
पुष्पन में जैसो पारिजातक प्रमान है;
जैसो वनराज वनचरों में विशिष्ट अति,
खेचरों में जैसो खगपति गतिमान है;
फाराणी कहत सुर-लोक में सुरेश जैसो,
मानव के वंश मनमोहन महान है.—२०

पूज्य बा

तू ही देश-प्रेम-पूर, अखंड सौभाग्य नूर,
तू ने ही असीम सहिष्णुता सिखलाई है.

श्री नवीन गांधी के [illegible])

बा

माता त्याग-मूर्ति तू विधाता भूमि भारत की,
कस्तुर बा ! या तें "लोकमाता" तू कहाओ है;
तू ही देश-प्रेम-पूर, अखंड सौभाग्य-नूर,
तू ने ही असीम सहिष्णुता सिखलाओ है;
तेरा सुख-दुःख सभी, बापु में समाया तू ने,
माया तेरी बापुजी की छाया में छुपाओ है;
कारागृह बहि बापु की बढ़ाओ तहां—
भीतर में भव्यतम तेरी ही बडाओ है.—२१

महात्मा

स्वदेशी को सूत्र सारे, हिंद को सिखाय दीनो,
विदेशी को मोह देश-द्रोह सों दिखायो है;
महि पे न मायो, सूखे देह में समायो तू हो,
या तें "गांधी महात्मा" को महा पद पायो है;
ठेर-ठेर प्रेम-पंचजन्य फूंक फेर-फेर,
मिट्टी हु के ढेर-ढेर, मानवी बनायो है;
वज्र के जंजर फूल-कलियों में फेर दीनो,
फूलों की कलि पे पानी, वज्र को चढायो है.—२२

आंधी

विश्व में विज्ञान आज, जालीम शैतान भयो,
सत्ताओं के स्तंभ भये, महा मगरूर है;
पोप-लीला गओी तहां, तोप-लीला भओी आज,
सभ्यता के भक्त राष्ट्र, रक्त-तृषातूर है;
झूट मार-कूट महा, लूट लसलूट चली,
आपस की कूट फूट ही में चकचूर है;
काराणी कहत घोर, घेरी जोर-जुल्म हु की,
अंधाधुंध आंधी ता में गांधी कोहीनूर है.—२३

शान्ति—मंत्र

तोप-गोला छोड-छोड, कोट-किला तोड-तोड,
जुद्ध जोड कोअु, ताज-तख्त हु कों ताको है;
काहु को लगी है चोट, काहु के कंपे हैं कोट,
काल के कुठार हु को, काहु पे कडाको है;
जमा जुद्ध जहाज कोअु, सागर की रानी भयो,
को' भयो हवाओी-बल्द, राजवी हवा को है;
काराणी कहत कुल, आलम शुद्धारिबे को,
मोहन गांधी को अेक, मंत्र अहिंसा को है.—२४

छूआछूत

धर्म-गुरू धर्म-कर्म-मर्म हु को गये चूक,
भेद-भर्म से अचूक, देश को दगा दिया;
पीडितों को हुअी पीड, भारती को भअी भीड,
महात्मा के आतमा को जुल्म ने जगा दिया;
तम-दल तोड दिया, टूटे तार जोड दिया,
बिछड़े केते करोड, गले से लगा दिया;
काराणी कहत धीर-वीर मनमोहन ने,
छूआछूत तूत हु के, भूत को भगा दिया.—२५

वर्णातीत

ब्रह्म हु को जान भयो, ब्राह्मन सुजान वेश,
जा को अपदेश देश-देश में छवायो है;
दीन दलितों के मद्दा, रक्षक क्षत्रिय राज,
मात की मुक्ति के काज, जुद्ध को जगायो है;
वैश्य को विवेक अेक, चातुरी ना चूके कबु,
आमदानी-खर्च को आदर्श दिखलायो है;
शूद्र-सेवा-कर्मन को, मर्म लह्यो मोहन ने,
गांधी धर्म-धर्ण सर्व वर्ण में समायो है.—२६

अुपवास

सत्य-अहिंसा के शस्त्रागार को महान शस्त्र,
घोर निराशा में अेक, आशा को आवास है;
जालीम को जेर करे, काहु से ना वेर करे,
विश्व-प्रेम-पंकज की, सोहिनी सुवास है;
पीडक-पीडित पक्ष, अुभय को अुद्धारक,
अति अुपकारक क्या, प्रेम हु को पाश है;
आत्म को अुजास है कि, पुन्य को प्रकाश है कि,
नेह के निवास! ये तिहारे अुपवास है.–२७

छोडे ना

हृदय के रंग बिना, पवित्र प्रसंग बिना,
अहिंसा अभंग बिना, जंग आप जोडे ना;
आत्म के अजीत पराजीत ना पराजय में,
विजय में विवेक की टेक अेक तोडे ना;
भारत की भक्ति अेक मात्र हु की मुक्ति काज,
कारागृह कहा मृत्यु तक मुख मोडे ना;
काराणी कहत जा के, जा में हाथ डारे वा को,
बीसा बीस पार को अुतारे बिना छोडे ना.–२८

खट ऋतु

परम प्रफुल्ल देव-दुर्लभ दिमाग मध्य,
सदा काल ऋतु राज, विलस्यो बसंत है;
तप को प्रचंड ताप, ग्रीष्म को घमंड हरे,
अंग-अंग नेह की बरषा बरसंत है;
आंख में अुदित भयो, शीत शरत्-चन्द्रराज,
शुष्क देह-पुष्प हु में, प्रगटयो हेमन्त है;
काम-क्रोध मोह-मद, शीतल शिशिर बत,
गांधी! तेरे घट, खट ऋतु विलसंत है.—२९

अेकता

अेकता के काज अेक काय कुम्हलाय दीनी,
अैक्य काज मान-अपमान में न मानो है;
और को औगुन-प्हाड, राअी-दानो जान्यो अेक,
अपनो औगुन-दानो, प्हाड सों प्रमानो है;
अपने को होय, और को न कहीं होय कष्ट,
अंतिम आदर्श यही, अंतर में ठानो है;
काराणी कहत, कौन भेद को लहत तेरो,
अंग-अंग अेकता के रंग से रंगानो है.——३०

भूपन को भूप

प्रेम-योग धर्म-धारी, विश्व-प्रेम को विहारी,
प्रेम को पूजारी अेक, प्रेम को स्तूप है;
शान्ति को स्वरूप धूप-छांव ही में अेक रूप,
बीसवीं सदी के सारे, विश्व में अनूप है;
सृष्टि में सुस्नेह-वृष्टि, वूठी है अनूठी वा की,
मूठी हड्डी पसली में, सूखे-से स्वरूप है;
काराणी कहत अैसो, गांधी अकिंचन अेक,
भव्य रुप भिक्षुक में, भूपन को भूप है.—३१

चोर जान्यो चन्द है

आत्म को अुजारो है कि, नेह को नजारो है कि,
सारे हिंद को सौभाग्य-सितारो बुलंद है;
रंक है, कि राज है कि, राजन को राज महा,
अमित अगम्य अति भारती को नंद है;
काराणी कहत पृथिवी पे परिपूर्ण कौन,
मोहन को जानत अमंद है कि मंद है;
भक्तन ने मोर जान्यो, शूर रण-शोर जान्यो,
फंदी जन फंद जान्यो, चोर जान्यो चंद है.—३२

दधीचि-अवतार

कैधों*वसुधा में सुधाकर को उजास हुवो,
कैधों प्रभाकर को प्रकाश-पारावार है;
कैधों मूर्तिमंत महा प्रणय प्रकट भयो,
कैधों अंशाकार सत्य-अहिंसा को सार है;
कैधों नीलकंठ भयो, विश्व को पचाय विष,
कैधों काम जारिबे को, जाग्यो त्रिपुरार है;
कैधों कृश काय में समायो है सुदामा मुनि,
कैधों गांधी दधीचि को, आयो अवतार है.–३३

नैनन को नूर है

कैधों कृष्ण योगेश्वर, धनुर्धर पार्थ साथ,
विश्व को विजेता वर-वीर महा शूर है;
कैधों चारु चांदनी को, आयो है अखंड पूर,
सत्य-अहिंसा को सूर, मुल्क मशहूर है;
कैधों गुरु नानक, कि विदेही जनक कैधों,
महात्मा मयूरध्वज, भक्तजी विदूर हैं;
कैधों प्रेम परशु को, पायो है परशुराम,
कैधों गांधी भारत के, नैनन को नूर है.–३४

*कैधों=क्या .

मोहिनी

पुष्प से सुकोमल तू, वज्र से कठिन महा,
नूतन ही तू ही पुरातन को पूजारी है:
हास्य को भंडार तू ही, जलतो पहाड तू ही,
तू महा गंभीर तू विनोद को विहारी है;
बाल हु को बाल तू ही, विश्व को महान वृद्ध,
अेक अकिंचन तू ही, कुबेर भंडारी है;
शान्ति के रचैया तू ही, क्रान्ति के मचैया तू ही,
मेरे मनमोहन ! ये मोहिनी तिहारी है.–३५

आरती

तारीफ तिहारी तात ! मो से तो कही न जात,
निर्मोही निर्ग्रंथ तू अपरिग्रह-धारी है;
धर्म-धनु-धारी तू आदर्श ब्रह्मचारी तू ही;
साधु तू संसारी तू निहारी बलिहारी है;
वल्लभ-जवाहर-से शेर सरजाय तू ने,
ब्रिटन के शेर की बहादुरी विदारी है;
बंधन ते कंपित भी, रोम-रोम हर्षित-सी,
भारती ने आज तेरी आरती उतारी है.–३६

काल की कमान को

देश को आदेश दीनो, स्वराज संदेश दीनो,
वढाय विशेष दीनो, अहिंसा की शान को;
खान को न पान को न, मानवी के मान को न,
जान को न ध्यान अेक, सत्य के निशान को;

काराणी कहत सुरलोक, को सुरेन्द्र कहा,
मानव-महेन्द्र भयो, केन्द्र है जहान को;
जुगन को जोड़ दीनो, अनृत को तोड़ दीनो,
मोहन मरोड़ दीनो, काल की कमान को.—२७

निकलंक

चन्द्र-सूर्य चाअ फिरे, नक्षत्र की माल फिरे,
ध्रुवराज अेक अविचल है अटंक है;
आज मही-मंडल में, अडग अचल अेक,
हिन्द के फकीर को, दिगन्त तक डंक है;
जहां धर्म-जुद्ध तहां, अहिंसा-आयुध-धारी,
गांधी रज-धीर नर-वीर तो निःशंक है;
जा को प्रेम-पंकज है, पंक-अंक में प्रफुल्ल,
मोहन-मयंक में कलंक को न अंक है.—२८

आतम को राम

सत्य में सुजान सत्यवादी हरिश्चन्द्र जान,
सुनीति में पूर्ण पुरुषोत्तम श्रीराम है;
आत्म-त्याग में अनूप, नौतम गौतम-रूप,
अहिंसक धीर महावीर को पैगाम है;
अेक टेकवंत दयानंद दया-आनंद में,
भारत के भीष्म पिता, नैष्ठिक निष्काम है;
नूतन युगावतार कृष्ण न्याय-नीत-नाम,
गांधी गुन-धाम, मेरो आतम को राम है.—३९

हजार हाथ छाती है

सेवा-व्रत-धारी विश्व-धर्म के विहारी महा,
मूरति तिहारी सत्य-स्नेह से सोहाती है,
अेक अहिंसा की अति तची तेरी तेग या तें,
मस्त मदमाती शाहन्शाही अकुलाती है;
कराणी कहत आज, तेर आत्म-तेज हु की,
खंड-खंड में अखंड, ज्योति लहराती है;
वामन-स्वरूप में समा रह्यो विराट कहां?
मुट्ठीभर हड्डी पे हजार हाथ छाती है.—४०

मोहन

ग्वाल-बाल गो-कुल को परम् प्रतिपाल, कलि—
काल में गोपाल लाल, मानव के वृंद को;
दानवी दिमागन के, तांडव को तोड दीनो,
मोड दीनो मान जिन्हें, कंस मतिमंद को;
भारत में भव्य महाभारत मचाय दीनो,
ढाय दीनो आय असुरो के फैल-फन्द को;
तारन में अेक चन्द, मोहन आनन्द-कन्द,
नन्द को न नन्द, कर्म-योगी कर्म चन्द को.–४१

आत्म–बल

देह को प्रचंड नाहिं, बली भुज-दंड नाहिं
काहु महा-बाहु को न बल हु प्रबल को;
तीर नाहिं तोप नाहिं, बख्तर पे टोप नाहिं,
अस्त्र न आकाश को, न शस्त्र जल-थल को;
आज को न, कल को न, अस्त्र ही अमल को न,
छल-भेद दल को न बल महा मल्ल को;
रथी महारथी अतिरथी अेक नाहिं कछु,
मोहन महान भयो, अेक आत्म-बल को.–४२

बानी

सुधारस-सिंधु की विमुक्त महा धारा वैसी,
रसना रसाल बाल-बाल विहसंत है;
बानी राम-बान, चोट चूके ना अचूक जा की,
शब्द-शब्द सत्य-महासागर गर्जन्त है;
आनन को अमृत के, मेह की अखंड आन,
नैनन से नेह-निधि-नीर बरसंत है;
बोलन के तोल में, सुदेह के हिंडोल में,
अमोल बोल बोल में, बसंत बिलसंत है.–४२

अभय

अभय को मंत्र महा, छत्र सों छवाय दीनो,
भय को रह्यो न भास, जेल को जंजीर को,
जेल भयो म्हेल, कारावास कृष्ण-वास भयो,
लोहन-जंजीर लगे, सोहन शरीर को;
मरण आगे अमर, मरजीवा गये मर,
ता को कहा डर ! तोप-तेग को न तीर को;
'काराणी' कहत धन ! अभय-ध्वज-धारी ! इसु–
ख्रिस्त अवतारी ! ये निहारी तदबीर को.–४४

विना

बोले विना बात करे, मौन से महात करे,
वज्र को निपात करे, वैर को बसाय बिन;
विना तार आतम के, तार को मिलावत है,
जाचक हो जाचत है, हाथ को हिलाय बिन;

विना ताप तन को तपाय महा तप करे,
जोगी हो के जप करे, जंगल बसाय बिन;
काराणी कहत कहा कहुं मनमोहन ने,
मन मेरो मोह लीनो, बांसुरी बजाय बिन.–४५

कुरबानी

भारत में भोर भयो, पंखीन को शोर भयो,
दिन हु को दोर भयो, रैन तो बिहानी है;
स्नेह-बंध सांधी, आंधी अंधेरी को बांधी, तू ने–
गांधी ! भूमि भारत की पीड़ को पिछानी है;

तेरे आत्म-संयम की, अनेरी अतूल गति,
कोमल कुसुम की सी, काया कुम्हलानी है;
कष्ट की कहानी है कि, नेह की निशानी है कि,
देह में दिखानी यह, तेरी कुरबानी है.–४६

वारा*

बेंत अेक कौपीन तें, विश्व के सुवस्त्र वारौं,
अस्त्र-शस्त्र वारौं तेरे, प्रेम हु के पाश तें;
श्वेत शीश-बस्तर तें, राजन के ताज वारौं,
शरत्-शशिराज वारौ, आत्म के भुजास तें;
तेरे देह दुर्बल तें, केते महा-काय वारौ,
भव्य भौन वारौं पर्णकुटी के निवास तें;
तूटे-फूटे दंतन तें, मोतन की माल वारौं,
प्रातः को प्रकाश वारौं, तेरे मुक्त हास तें.–१७

बलैया

तप के तपैया! जप मुक्ति के जपैया तू ही,
प्रेम के पपैया! लाख कोटि के लुटैया है,
रण के रचैया! राम-धून के मचैया! महा,
काम-क्रोध-मोह कालि नाग के नथैया है;
सत्य-अहिंसा की अेक ज्योति के जगैया तू ही,
नैया मंझधार हु की पार को लगैया है;
मोहन कन्हैया! मोह-वंसी के बजैया! हिन्द–
छैया! आज मैया तेरा, ले रही बलैया है.–४८

वारौं=न्योछावर कर दूं

न होता तो

अिन्द्र न होता तो नाहिं सृष्टि पे सुवृष्टि होती,
शेष न होता तो शीश, धरणि धरत कौन ?
चन्द्र न होता तो चारु, चादनी न होत यहां,
तरणि न होता तो तिमिर को हरत कौन ?
राम न होता तो राज-रावन रोरत कौन,
कृष्ण न होता तो ध्वंस कंस को करत कौन ?
न होता नीडर नरवर मनमोहन तो,
भारत के भीतर नीडरता भरत कौन ? —४९

स्वराज

आज अुदैमान अहा ! भाग्य-रवि भारत का,
विजय-दुन्दुभि घोर-शोर गहरा दिया;
लहरा दिया है आप, अिन्द्र-चाप चक्र-केतु,
तोरन त्रिरंगी फरहर ! फहरा दिया;
नगर-नगर मानो, अलका झलक रही,
चन्द्र-माळ चारों ओर, ज्योति मे जगा दिया;
भारत के आंगन स्वराज का सुवर्ण-दिन,
दृगन से देख लिया, देश को दिखा दिया।—५०

कहा कहुं ?

मोती कहुं लाल पंत पंडित् सरदार कहुं,
गोकुल के विठ्ठल विजय-मणि-माल मैं;
देव-महादेव दास, मृदु सरोजन्-प्रकाश,
दादे अमृत-सुभाष वा किशोर बाल मैं;
चक्रवर्ती राजेन्द्र रवीन्द्र सिंह-घोष कहुं,
श्रद्धा-आनंद-अरुण प्यारे गौपाल मैं;
आझाद बजाज* राय राम घनश्याम कहुं,
खान कहुं कहा कहुं, मोहन कृपाल मैं ?-५१

बावनी

हिमाद्रि की हद अेक रजकन कहा कहे ?
कहा नूर सूर को झींगुर कहे जाय के ?
सागर-रत्नाकर के किनारे को कंकर सो,
कहा महा अर्णव को ब्यान करे आय के ?
जैसे सूरदास संत तुलसी नरसिंहादि,
भक्त जन भये धन, हरि-गुन गाय के;
कराणी जीवन-धन, कच्छ सुवतन धन,
गांधी मनमोहन की, बावनी बनाय के.-५२

* बजाज=कपड़े की दुकान वाला

तीर्थ-भूमि

तुम हिलते हैं, तब हिन्द भूमि हिलती है,
तुम हंसते हैं, तब दिश-दिश सब हंसती है;
तुम अुठते हैं, तब अतुल शक्ति अुठती है,
तुम चलते हैं, तब तीर्थ-भूमि चलती है. –५३

भगा दिया

" हिन्द छोड़ दो " नारा तुमने,
अतूल बल से लगा दिया;
गोरी फौज फ़िरंगी तुमने,
अपूर्व बल से भगा दिया.–५४

अमीर-गरीब

तुमने अमीर को अणमोला, देश-धर्म दिखलाया है;
तुमने गरीब के गौरव का, सत्य मर्म सिखलाया है.–५५

विद्या-भाषा

देश-काल का ख्याल लगा, भाषा-विद्या विकसाओी है;
बुनियादी तालीम-योजना, तुमने नओी चलाओी है.–५६

भगवान मिला!

जलियाँ वाले घोर जुल्म में, भारत को भगवान मिला;
वीर शहीदों के शोणित से, मुक्ति-मंत्र का दान मिला.—५७

सागर-मन्थन

भारत भर सागर-मन्थन से, सारा हिन्द हिलाया है;
महा विषम विष आप पिया है, अमृत हमें पिलाया है.
सुर अमृत को असुर रक्त को, मानव पय को पाया है;
भव-सागर का जहर भयंकर, शिव-शंकर को भाया है.—५८

मेरा है

आज अनेरा यश-मन्दिर-सा, योगी! डेरा तेरा है;
तेरा डेरा सब ने घेरा, सब तेरा तू मेरा है.—५९

वाणी-लेखनी

शब्द-बाण तेरा अंतर-पट आरपार हो जाता है,
बाण प्राण हर जाता है यह नवजीवन भरजाता है.

मुक्त भारत स्वप्न-द्रष्टा, दिव्य आगम देखनी,
सत-अहिंसा समर स्रष्टा, अमर अमृत पेखनी;
परम प्रेम-परेखनी, नित अलख लख्य अलेखनी,
अखिल अवनी में अनुपम, धन्य तेरी लेखनी,
जी धन्य तेरी लेखनी.—६०

हिन्द-दुल्हारो

पूर्ण प्रभाकर प्रेम-प्रभा को, भारत-भाग्य-सितारो है,
स्नेह-सुधारस को रत्नाकर, आतम-ज्योत अुजारो है;
सत्य-अहिंसा मोर-मुकुट-धर, मनमोहन मतवारो है,
कंस को काळ गोपालक गांधी, हिन्द को लाल दुल्हारो है.–६१

कृष्ण-मोहन

कृष्ण-जन्म कालिन्दी-तट, सोरठ-तट पर हत-प्राण हुवे,
सोरठ-तट जन्मे मोहन, कालिन्दी-तट हत-प्राण हुवे.–६२

युगावसान

वीर-रत्न विक्रम संवत्, दो हजार पर चार;
ज्वलंत ज्योति जगत की, बुझी भयो अन्धार.
पौषी · कृष्णा पंचमी, शुक्र शोकुकर वार;
कातिल की गोली चली, संत-हृदय के पार.
अडग खड़े कर जोड़ के, कुतुब-मिनार समान;
अचेत बन आखिर गिरे, भारत के भगवान.
थरहर! धरणी थरहरी, कांपन लागा काल,
आज यहां से अुठ चला, भारत मां का लाल.–६३

गयो !

भारत को लाल गयो, गौवन-गोपाल गयो,
दीन को दयाल गयो, देहली के द्वार में;
गुन को गंभीर गयो, धीर धर्म-वीर गयो,
हिन्द को फकीर गयो, पारब्रह्म पार में;
राजन को राज गयो, संतन् सिर-ताज गयो,
गरीब-निवाज गयो, "हे राम !" पुकार में;
रंकन की झोंपड़ी को, रत्न कोहीनूर गयो,
भारत को नूर गयो, देवन-दरबार में.-६४

वज्र-निपात

भूतल में भूकंप हुवा, दश दिश में उल्कापात हुवा;
हिम-गिरि का हिम-शृंग गिरा, क्या घर-घर वज्र-निपात हुआ ?-६५

अंतिम स्थान

जहां आप गिर पड़े वहां, मानवता का उत्थान हुवा,
अंतिम यात्रा-स्थान आप का, सुर-नर तीर्थ-स्थान हुवा.-५५

भस्म

पुनित तीर्थ-धामों ने जिन से, पवित्रता को पायी है;
देश-देश ने भस्म तुम्हारी, वे पर शीश चढ़ायी है. - ६७

चाहना

भारत तुम्हारी भस्म को भी, छोडना चाहता नहीं;
सहयोग तेरा स्वप्न में भी, तोडना चाहता नहीं. — ६८

जीवन-धन

नित्य सनातन नित्य पुरातन, नित नित के नूतन तुम थे;
नित नवजीवन नित नवयौवन, नित के जीवन-धन तुम थे.—६९

चूमती थी

त्रिभुवन-विरल विभूति तेरे, वर चरणों में रमती थी;
चरण-चरण पर धरणी तेरे, चरण-कमल को चूमती थी. —७०

टुकडे

अेक कौमी कटुता ने दो भारत के टुकडे कर डाले;
भारत के टुकडों ने तेरे, दिल के टुकडे कर डाले.—७१

व्यक्तित्व

जहां जहां कौमी दावानल, जुल्म-जहर भर जाता था;
वहां वहां व्यक्तित्व तुम्हारा, चमत्कार कर जाता था. —७२

कुछ का कुछ

आयुप के कुछ अल्प समय में, कुछ का कुछ कर दिखलाया;
भारत की सुरत का नकशा, कुछ का कुछ कर दिखलाया.—७३

झूझा था

भारत का बन्धन अपना, भव-बन्धन समजा-बूझा था;
मुक्तात्मा मुक्ति के कारण, आजीवन वह झूझा था.—७४

शान्ति-सागर

गोली के गहरे गर्जन थे, प्रशान्त सागर-से तुम थे;
सन! सन! अुन के सन्नाटे थे, अचल हिमाचल-से तुम थे.—७५

चले!

सब शस्त्रों में अेक अहिंसा की दिखला कर जीत, चले,
छल पशु-बल सब हिंसा-दल से, हो कर आप अजीत चले.
सत्य-अहिंसा मानस मोती, चुगने वाले हंस चले,
समस्त मानव-वंश-विभूति, प्रेम-धर्म अवतंस चले.—७६

जलती ज्योत

आप चले पर आत्म-तेज की, जग में जलती ज्योत रही;
महाभारत के मनमोहन की, जुग-जुग जलती ज्योत रही.—७७

यावच्चन्द्रदिवाकरौ

जबलग सूरज—सोम व्योम में, ज्योतिष्मान सुदाम रहेगा,
जबलग मानव-मानव में, अेक मानवता का नाम रहेगा;
कृष्ण रहेगा राम रहेगा, पयगम्बर—पयगाम रहेगा,
तबलग भारत के अंतर में, गांधी ! तेरा धाम रहेगा.-७८

अल्विदा !

अल्विदा ! अय हिन्द के, आंखों के तारे ! अल्विदा !
अल्विदा ! छोटे—बडे, सब के सहारे ! अल्विदा !
मात भारत के दुलारे ! तुम सिधारे ! अल्विदा !
अल्विदा बापु ! हमारे, प्राण—प्यारे ! अल्विदा !—७९

अंतिम

अंतिम अुन्यासी भये, जीवन—वर्ष—प्रवास,
काराणी कर जोड के, सुकवित कीन प्रकाश.

श्रीरामचरणार्पणमस्तु ।

चले फिरंगी !

कदम कदम पर कदम बढा कर, कदम जमा कर चले फिरंगी !
भरतभूमि के बना, के टुकडे, बदन जुदा कर चले फिरंगी !
हमारे मादर-वतन का यह, गुलचमन लुटा कर चले फिरंगी !
कली-कली के हृदय-कमल को, जखम लगा कर चले फिरंगी !

कुसंप कौमी कलह्-कतल का, चक्कर चला कर चले फिरंगी !
झनून जुल्मो सीतम जगा कर, फरेब क्या कर चले फिरंगी !

कभी हमारी भरतभूमि भी, बसंत-बन-सी हरी-हरी थी,
अखूट धन से, सुधेनु-धन से, सभर सुहासित भरी-भरी थी,
थी रिद्धि-सिद्धि, सुसमृद्धि थी, सुभाग्य लक्ष्मी खडी-खडी थी,
भिसी धरा में थे मोती पकते, जो देख आंखें ठरी-ठरी थी,

पुनित पुरातन वो हिंद-धरणी, लुटा-फिटा कर चले फिरंगी !
झनून जुल्मो-सीतम जगा कर, फरेब क्या कर चले फिरंगी !

कभी हमारी भरतभूमि यह, अलकपुरी-सी बनी-बनी थी,
कनक-कनी-सी भिसी वतन की, अमर-भूमि की कनी-कनी थी,
यहीं धुरंधर धनुर्धरों की, सबल कमानें तनी-तनी थी,
यहीं अनार्यों नराधमों की, अनार्यता को हनी-हनी थी,

यहीं निरंकुश निसीम हयवानियत नचा कर चले फिरंगी !
झनून जुल्मो-सीतम जगा कर, फरेब क्या कर चले फिरंगी !

कभी हमारी भरतभूमि आर्य-संस्कृति को खिला रही थी,
विज्ञान-विद्या-कला के बल, दिल कलाधरों के हिला रही थी,
विसाल वसुधा को मुक्त मन से, स्व प्रेम अमृत पिला रही थी,
जले दिलो को जिला रही थी, हंसी-खुशी खिल-खिला रही थी,

वहीं विनाशक जहर जमा कर, कहर मचा कर चले फिरंगी!
झनून जुल्मो-सीतम जगा कर, फरेब क्या कर चले फिरंगी!

किये हैं कौमी कलमकशों ने, ये भूमि भारत के दो दो टुकड़े,
जमीं के दो दो किये है टुकडे, दो आसमां के किये हैं टुकड़े,
किये है रोटी के दो दो टुकडे, किये है पानी के दो दो टुकड़े,
किये हैं माता के दो दो टुकडे, किये हैं भ्राता के दो दो टुकडे,

अखंड को खंडिता बना कर, जिगर जुदा कर चले फिरंगी!
झनून जुल्मो-सीतम जगा कर, फरेब क्या कर चले फिरंगी!

हिजरती लाखो जनो की हारें, असल वतन से निकल रही हैं,
जनम-जनम की स्व जन्मभूमि को छोड बन से निकल रही हैं,
बीमार मन से, वेहाल तन से, खुले बदन से निकल रही हैं,
वतन से नहिं वह निकल रही है, वो जान तन से निकल रही है,

जुदाओी का अिन्द्रजाल छा कर, कपट कला कर चले फिरंगी!
झनून जुल्मो-सीतम जगा कर, फरेब क्या कर चले फिरंगी!

किसी की दौलत, किसी की हशमत, किसी की अिस्मत लुटी हुअी है,
किसी की मिन्नत छुटी हुअी है, किसी की हिम्मत खुटी हुअी है,
किसी की पाखें कटी हुअी है, किसी की आंखें फटी हुअी है,
किसी की ताकत टूटी हुअी है, किसी की किस्मत फूटी हुअी है,

किसी के मालो मकान जर मिट्टी में मिला कर चले फिरंगी !
झनून जुल्मो सीतम जगा कर, फरेब वया कर चले फिरंगी !

किसी की आहें निकल रही हैं, किसी की छाती अुछल रही है,
किसी के जानो-जिगर में कैसी, सीतम की भट्ठी-सी जल रही है,
किसी की आंखों से अश्रु-धारा, अखंड सरिता-सी चल रही है,
किसी को पल पल सताती पागल बनाती काली कतल रही है,

चले चलन हिन्दु-मुस्लिमों के, गले कटा कर चले फिरंगी !
झनून जुल्मो-सीतम जगा कर, फरेब वया कर चले फिरंगी !

कोअी है भूखा कोअी है प्यासा, किसी के सर पर कजा खड़ी है,
किसी की औरत, किसी को अिज्जत, किसी के हाथों में जा चड़ी है,
किसी की किश्ती भंवर चडी है, किसी की हस्ति बनी कड़ी है,
किसी के तन में धड़क चड़ी है, किसी के दिल में फड़क पड़ी है,

नमक को खा कर किसी तरह अब, नमक अदा कर चले फिरंगी !
झनून जुल्मो सीतम जगा कर, फरेब वया कर चले फिरंगी !

कलह-कतल की झनून-ज्वाला, बुझाने आया था अेक योगी,
जहर भरे झेरी विषधरो को, दबाने आया था अेक योगी,
अचल हिमाचल-से आत्म-बल को, दिखाने आया था अेक योगी,
अमर समर्पण के पाठ सब को, सिखाने आया था अेक योगी,

वही जगत की विमल विभूति, लुटा के आखर चले फिरंगी!
झनून जुल्मो-सीतम जगा कर, फरेब क्या कर चले फिरंगी!

परंतु मोहन महात्मा का, न अेक निष्फल निशान होगा,
सकल जगत की सुलेह खातिर, सफल अुसीका विधान होगा,
स्वतंत्र भारत वतन भया सब प्रताप का पुनरुत्थान होगा,
अखंड यह हिंदुस्तान होगा, वो सारे आलम की शान होगा,

कपट-कला के प्रपंच-पथ पर, पछाड़ खा कर चले फिरंगी!
झनून जुल्मो-सीतम जगा कर, फरेब क्या कर चले फिरंगी!

चले हो तुम, किंतु चाहे जी तो, निशंक आना यहां फिरंगी!
मगर तुम्हारे शरीफ दिल को, न फिर लुभाना यहां फिरंगी!
न लाना तशरीफ, न अैसी तकलीफ, कभी अुठाना यहां फिरंगी!
चलो नमस्ते! तुम हो समजते! न फेर आना यहां फिरंगी!

खडे न रहना, कदम पे जाना कदम अुठा कर चले फिरंगी!
झनून जुल्मो-सीतम जगा कर फरेब क्या कर चले फिरंगी!

अय दिल्ली!

सिंहों के आसन-सा सिंहासन अुलटाया अय दिल्ली!
आज ताज ठहराया तुमने, कल ठुकराया अय दिल्ली!
शाह-वज़ीरों शाहजादों को, ज़हर पिलाया अय दिल्ली!
निकला कर आंखें कितनी, सिर-कर कटवाया अय दिल्ली!

जालीम कैसा जोर चलाया, दौर चलाया अय दिल्ली!
क्या क्या कहर मचाया, कितना खून बहाया अय दिल्ली!

भरी सभा में द्रुपद-सुता का, वस्त्र-केश खिंचवाया है,
भीषण युद्ध महाभारत का, भारत में जगवाया है,
पांडव-कौरव में विग्रह का, तांडव नृत्य नचाया है,
कुरुक्षेत्र में काल-चक्र का, क्या रण-खेल रचाया है,

भारत का वीरत्व-तेज, निस्तेज बनाया अय दिल्ली!
क्या क्या कहर मचाया, कितना खून बहाया अय दिल्ली!

क्षत्रियों के कर से सरकी, पहला पलटाया पृथुराज,
गुलाम-खिलजी-वंश गये, तब तघलख के सिर रक्खा ताज,
सैयद-लोदी-वंश चले, फिर बाबर सज कर आया साज,
मुघलों को मस्त बना कर, ताज किया अुनका ताराज,

अकबर-हेमु राज-तेज का, रंग अुडाया अय दिल्ली!
क्या क्या कहर मचाया, कितना खून बहाया अय दिल्ली!

समरकंद से आओ चडाओ, पागल पूर–दमाम चली,
तैमुरशाह के तातारो की, तब तल्वार तमाम चली,
नादिर की नादिरशाही की, काली कत्ले–आम चली,
कितने दिन तक तीर–कटारी, बरछी सब बेफाम चली,

कोहीनूर–मयूरासन, जर–जेवर लुटवाया अय दिल्ली!
क्या क्या कहर मचाया, कितना खून बहाया अय दिल्ली!

फिरे निरंकुश फेर फिरंगी, स्वांग लिया सौदागर का,
सेवक बन कर शेठ बने, छल कपट जगा जादुगर का,
भारत के जब शेर–नरो का, वेश बनाया बंदर का,
नगर–नगर नाना साहिब ने, भडका दिया नया भड़का,

सन सत्तावन में अंग्रेजी तख्त डुलाया अय दिल्ली!
क्या क्या कहर मचाया, कितना खून बहाया अय दिल्ली!

अेक योगी अवधूत अुठा, भारत में गांधी–वाद अुठा,
घर–घर गर्जन हुवा, गगन में स्वतंत्रता का नाद अुठा,
सत्य–अहिंसा के शस्त्रो से, भारत हो आझाद अुठा,
पर पडदे में छिपके छिपके, कातिल कौमीवाद अुठा,

हिन्दु–मुस्लिम को आपस में, हाय! लडाया अय दिल्ली!
क्या क्या कहर मचाया, कितना खून बहाया अय दिल्ली!

अय दिल्ली ! क्या कहुं तुम्हें ? तुमने मन में क्या ठान लिया ?
मानव का अभिमान-मान सब छान-बीन कर छान लिया !
कितने नरवर वीर कलाधर, नरपतिओं का प्रान लिया ?
तदपि न क्या परितृप्त हुओ, "बापुजी" का बलिदान लिया !

अपने आंगन में भारत का लाल लुटाया अय दिल्ली !
क्या क्या कहर मचाया, कितना खून बहाया अय दिल्ली !

विदा !

कहा चले बापुजी ! हम से मुह मरोड चले बापु !
आज हमें जिस हालत में, क्या हम को छोड चले बापु !

जुग-जुग की निरमल ज्योति-सा, जीवन धन्य तुम्हारा था,
जन्म लिया समकाल हमें, फिर जीवन धन्य हमारा था,
अेक अलौकिक आत्म-तेज का, अवनी में अुजियारा था,
हम-से दीन-दुःखी जन का, सुख-दायक अेक सहारा था,

निलखत भारत माता के, तन मन को तोड़ चले बापु !
आज हमें जिस हालत में, क्या हम को छोड़ चले बापु !

जीवन की दरकार नहीं, कुछ मृत्यु की परवाह नहीं,
सुख-संपत की चाह नहीं, कुछ दुःख दर्दों की आह नहीं,
दाम नहीं सुख धाम नहीं, आराम-नाम हमराह नहीं,
राम-नाम की राह निरंतर, और किसी की राह नहीं,

कातिल की गोली की सन्मुख, दो कर जोड़ चले बापु !
आज हमें जिस हालत में, क्या हम को छोड़ चले बापु !

पतित-पावन आप पधारे, पतित पावन करने को,
दीन-दुःखी-दुर्बल-दलितो के, दुःख दरदो को हरने को,
कर्म-योग का मर्म बताने, धर्म-ध्वजा को धरने को,
जग-व्यापी ज़ेरी पशुता में, मानवता को भरने को,

अभी हमारी आशा के, तारो को तोड़ चले बापु !
आज हमें अिस हालत में, क्या हम को छोड़ चले बापु !

शाह कहुं पतशाह कहुं, क्या शाहन के सरदार कहुं !
अेक अकिंचन रंक कहुं, या कुबेर का भंडार कहुं !
सौम्य सुकोमल पुष्प कहुं, क्या भीषण वज्र-प्रहार कहुं !
सेवक-संत-महंत कहुं, नर-नारायण-अवतार कहुं !

कहा कहुं अंधार-पिछोडा, अब तो ओढ़ चले बापु !
आज हमें अिस हालत में, क्या हम को छोड़ चले बापु !

कोटि कोटि आंखों का तारा, किस कातिल ने छीन लिया ?
भारत का सौभाग्य-सितारा, किस पागल ने बीन लिया ?
पांख पसारी हम ने तो फिर किस ने पांखे हीन किया ?
अुन्नत शीश हमारा किसने, दुनिया भर में दीन किया ?

किस कारन मुख मोड़ लिया, अब किस की ओर चले बापु !
आज हमें अिस हालत में, क्या हम को छोड़ चले बापु !

पुण्यश्लोक पुण्यात्मा मेरे, मनमोहन महेमान चले,
दो आंखो सम हिन्दु-मुस्लिम, सब को मान समान चले,
अल्प समय में आझादी का, अपूर्व दे कर दान चले,
अवनी-पट से अंतरिक्ष में, हो कर अंतरध्यान चले,

झूम रहे जब आफत के, बादल घनघोर चले बापु !
आज हमें जिस हालत में, क्या हम को छोड़ चले बापु !

राज चले, महाराज चले, सब राजन के अधिराज चले,
रण-शूरन सिर-ताज चले, सब स्वतंत्रता के साज चले,
देश छत्र-से बाज चले, तुम सत्य-अहिंसा काज चले,
आज गरीब-निवाज चले, वह जीवन-मुक्त जहाज चले,

मानव-कुल के मुकुट-मणि, सुर के सिर-मोर चले बापु !
आज हमें जिस हालत में, क्या हम को छोड़ चले बापु !

कहां चले बापुजी ! नवजीवन निर्माता, कहां चले !
कहां चले भारत के प्यारे भाग्य-विधाता, कहां चले ?
कहां चले मोटे महिपतिओं के मांधाता, कहां चले ?
कहां चले गांधी मनमोहन मुक्तिदाता, कहां चले !

हृदय-भग्न माता को रोर, कलेजा कोर चले बापु !
आज हमें जिस हालत में क्या हम को छोड़ चले बापु !

जीवन–लीला शान्त भयी, अब चरखा–पूणी–सूत कहां !
आप अमर मृत्युंजय बापु ! आप कहां जमदूत कहां !
तुम–से प्रेमी पिता कहां, हम पागल पूत कपूत कहां !
हम विष-वर्तुल–कीट कहां ! तुम अवनी के अवधूत कहां !

कोन जगत के जीवन से, जीवन को जोड़ चले बापु !
आज हमें अिस हालत में क्या हम को छोड़ चले बापु !

बिसर गअी सब बुद्ध हमारी, हमें न बिसरना बापु !
आप क्षमा के सागर प्यारे ! हमें क्षमा करना बापु !
मात भार्त के आर्त नाद को अंतर में धरना बापु !
बिदा ! आखरी बिदा ! दयामय ! दया–मया रखना बापु !

कहां चले बापुजी ! हम से मुंह मरोड़ चले बापु !
आज हमें अिस हालत में क्या हम को छोड़ चले बापु !

महात्मा गांधीजी की जय !

ગુજરાતી કાવ્ય-પ્રસાદી

ગાંધીની હાટડી

(રાગ—કાયબા કાયબીના ભજનને)

એવી નવખંડમાં ન્યારી, ગાંધી ! તારી હાટડી ભાળી,
મોંઘેરાં મૂલ લેનારી, ગાંધી ! તારી હાટડી ભાળી.

તારી હાટડિયે, સ્નેહ-સેવાના સત્યના સોદા થાય,
અહિંસા કેરી અમૂલ્ય કસ્તૂરી, જગતમાં મ્હેકી જાય;

નવયૌવન નિત્ય દેનારી,
ગાંધી ! તારી હાટડી ભાળી.—એવી૦

તારી હાટડિયે, હેત-હીરાકણી મોત-મોતી તોળાય,
તાજ-તખ્તો ને રાજ-સિંહાસન આજ સાંધણમાં જાય;

ત્રિરંગી વાવટા વાળી,
ગાંધી ! તારી હાટડી ભાળી—એવી૦

તારી હાટડિયે, ત્યાગ-વૈરાગ્યના રંગ ઘેરા રંગાય,
તારા રંગે રંગાયલા એ તો કાળ ને કૂદી જાય,

મૃત્યુનાં અમી પાનારી,
ગાંધી ! તારી હાટડી ભાળી.—એવી૦

તારી હાટડિયે, મૃત-સંજીવની ગુટિકા કંઈ ઘૂંટાય,
ધૂળ-માટીમાંથી માનવી ઘડતો, કીમિયો બહુ પંકાય;

નવજીવન મંત્ર દેનારી,
ગાંધી ! તારી હાટડી ભાળી.—એવી૦

તારી હાટડિયે, ફૂલડાં ફોરે ને વજ્ર વીંઝાતાં જાય,
પ્રેમના તારા રસાયને ધીંગા પ્હાડ પીગળતા થાય;

ડુંગર ડોલાવવા વાળી,
ગાંધી ! તારી હાટડી ભાળી.—એવી૦

તારી હાટડિયે, ફોરતી ફૂલેલ - મ્હોરતી અમૃત-વેલ,
જડી-બુટી તારી ઝટ ઊતારે જુગો જુગ કેરાં ઝેર;

વ્હાલપથી વેર ધોનારી,
ગાંધી ! તારી હાટડી ભાળી.—એવી૦

યુગાવતારને આમંત્રણ

(સાગરના જાયા ક્યારે આવશો ?—એ રાગ)

આવો આવો યુગ-અવતાર ! આવો નવજીવન દેનાર રે !
ભારતના યોગી, ક્યારે આવશો ?
ગાંધી મનમોહન ક્યારે આવશો ?

સૂરજ આથમિયો આજે સ્નેહનો રે,
અવની છાયો અંધકાર,
વાદળ ઘેરાણું આજે વેરનાં.—આવો૦

સત ને અહિંસા એ તો ઓસર્યાં રે,
પ્રકટ્યા અસતના પૂર,
હિંસાનાં ધાડાં માઝા મૂકતાં.—આવો૦

રડતો રાતે પાણીડે રેંટિયો રે,
પૂણી કરે છે પુકાર,
ત્રાકું તો વળિયું બાપુ ! ખેવટ્યું.—આવો૦

સાગરના કાંઠડિયા સૂના પડ્યા રે,
સાબરમતીના મહા સંત !
પાણીડાં રોતાં તારા પ્રેમને.—આવો૦

પર્ણકુટીનાં રોતાં પાંદડાં રે,
સેવાગ્રામે સુનકાર,
વર્ધાનાં આશ્રમ જોતાં વાટડી—આવો૦

આવો તો અમૃત વરસે મેહુલા રે,
આવો બાપુજી ! એક વાર,
રડતી ટળવળતી માતા ભારતી.—આવો૦